

मुसीबत बिखरने के लिए नहीं निखरने के लिए है

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

सुख और दुःख जीवने में आने वलो दो पड़ाव हैं। सुख में न तो अधिक सुखी होना चाहिए और दुःख में न अधिक दुःखी। मुसीबत आने पर घबराना नहीं चाहिए। घबराने से बनता हुआ कार्य भी बिगड़ जाता है। हर परिस्थिति में धैर्य धारण करना चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में सुख और दुःख का द्वन्द्व चलता रहता है। इसलिए समाज में सहयोग और मैत्री को बढ़ावा देना चाहिए। मानव के समूह को समाज और पशुओं के समूह को समज कहा जाता है। पक्षी और पशु भी समूह में जीवन जीते हैं। दूर देश से उड़ते हुए पक्षी समूह में होकर एक देश से दूसरे देश में आते जाते रहते हैं। यदि किसी पर कोई विपत्ति आती है तो सामूहिक रूप से उस विपत्ति का सामना करते हैं। पशुओं में भी समूह की भावना देखी जाती है। यदि किसी समूह के किसी पशु पर कोई संकट आता है तो उस समूह के सभी मिलकर सामना करते हैं। आने वाले संकट का मुकाबला सभी सामूहिक रूप से करते हैं। कष्ट में एक-दूसरे की सहायता करते हैं। मुसीबत में वे बिखरते नहीं बल्कि एक हो जाते हैं और आने वाली विपत्ति का सामना करते हैं। आने वाले कष्ट के पहले ही सावधान हो जाना चाहिए। पानी आने से पहले ही बांध बनाकर सुरक्षा करनी चाहिए। जो नियोजित ढंग से कार्य करते हैं वे कष्ट में नहीं पड़ते। कल जिस कार्य को करना है उसकी योजना आज ही बना लेनी चाहिए। संकट आने पर उसका मुकाबला करना चाहिए। महापुरुषों के जीवन में अनेक संकट आते जाते रहते हैं। वे उन संकटों को जीतकर उन पर विजय प्राप्त करते हैं और महापुरुष कहलाते हैं। भगवान श्रीरामचन्द्रजी का जीवन , श्री कृष्ण का जीवन हमारे सामने है जिन्होंने कष्टों पर विजय प्राप्त कर भगवान की पदवी प्राप्त की। जीवन में अनेक कष्टों को सहा। शिवाजी, महाराणा प्रताप जैसे महापुरुषों ने जीवन में अनेक कष्ट सहे। लेकिन वे कष्टों से कभी घबराये नहीं, परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर आगे बढ़े और धैर्य का परिचय दिया।

मुसीबतों में बिखरे नहीं बल्कि मुसीबतों में विजय प्राप्त कर निखरने का प्रयास करना चाहिए। मुसीबत आने पर नकारात्मक विचार नहीं होना चाहिए।

युवकों के लिए यह विषय बहुत ही प्रेरणास्पद है। कभी-कभी देखा जाता है कि विद्यार्थी परीक्षा में असफल होने के बाद आत्महत्या कर लेता है। आत्महत्या कायरता है। ऐसे विद्यार्थी असफलता से समझौता कर लेते हैं। जबकि पुनरावलोकन करना चाहिए। भविष्य में सुधार का प्रयास करना चाहिए। मुसीबत और मजबूत बनाने के लिए आती है। ईश्वर पर पूर्ण भरोसा करके परिश्रमपूर्वक आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। घबराने से बनता काम बिगड़ जाता है। सुख-दुःख जीवन के दो पड़ाव हैं। चक्र के पहिए की तरह ऊपर नीचे होते रहते हैं। जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करके आगे बढ़ता है वह जीवन की हर परिस्थितियों को सहन कर सकता है। कहा गया है नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धाराएं प्रतिकूल न हो अर्थात् नाविक अनुकूल धारा में तो नाव आसानी से चला लेता है, किन्तु हवा के विपरीत यदि वह नाव को मंजिल तक पहुंचाता है तभी उसके धैर्य की परीक्षा है।

प्रतिकूलता में अनुकूलता को ढूंढना वीरों का कार्य है। जो व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में जीवन को आगे बढ़ाता है वह दुःखों से हार कभी नहीं मानता। वह दुःखों पर विजय प्राप्त करता है। कष्टों को सहन करना, दुःखों को सहन करना, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना और परीषहों को सहन करना कष्ट सहिष्णुता है। सहनशीलता, समभाव, राग-द्वेष से मुक्ति और सभी प्राणियों के साथ आत्मवत् दृष्टि रखना सद्गुण है। जब तक मानव में राग-द्वेष रहता है। तब तक वह मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता है। यह जगत दो दृष्टियों से विचारणीय है- इन्द्रिय जगत, भीतर का जगत। इन्द्रिय जगत बाह्य जगत है, इसे लौकिक जगत कह सकते हैं। आन्तरिक जगत आध्यात्मिक जगत है, यही भीतर का जगत है। यदि कोई व्यक्ति कष्ट प्रदान करता है तो इसका प्रतिरोध कई प्रकार से किया जा सकता है। लेकिन सबसे अच्छा ढंग सहनशीलता है। यदि प्रतिक्रिया की जाती है तो लड़ाई-झगड़ा होना निश्चित है। यदि परिस्थितियों को सह लिया जाता है तो टकराव टल जाता है। सहिष्णुता की पहचान यही है कि टकराव टालिए, टकराव विवाद को बढ़ाता है और सहिष्णुता मित्रता पैदा करती है। आज मानव की निगाहों में मानव का पतन हो चुका है। वह व्यक्ति को कीट पतंग से अधिक कुछ

भी समझने के लिए तैयार नहीं। आत्मीयता जो मानव की एक विराट चेतना स्पन्दन है, आज लगभग जड़ बन चुकी है। यदि कुछ है तो वह कुछ इने गिने, पारिवारिक व्यक्तियों तक सीमित हो चुका है और उसके स्थान पर भयंकर घृणा का विष भर चुका है। घृणा के तपेदिक से पीड़ित मानव जीवन की जो आज स्थिति है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। यह रोग आज घर-घर में व्याप्त है। घृणा के ही प्रभाव से सत्य और न्याय की सरेआम हत्या होती है। सद्गुण की अवहेलना होती है और योग्य व्यक्ति का भी तिरष्कार होता है। इन्हें घर घर में फैलाना चाहिये— कोई छोटा नहीं, कोई तुच्छ नहीं, कोई पराया नहीं। अपनत्व और सम्मान का जितना अधिक विस्तार होगा, टकराव का विष उतना ही नष्ट होता हुआ चला जाएगा। सामाजिक संरचना के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों का सर्वाधिक महत्व है। सामूहिक भावना से किया गया कार्य सभी प्रकार के मुसीबतों को समाप्त कर देता है।